Vol 3 Issue 10 April 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-10 | April-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

अलका सरावनी की उपलब्धि : एक अध्ययन

सुनिता क्षीरसागर

असिस्टंट प्रोफेसर, एस. के. सोमया महाविद्यालय

Abstract:-'उपलब्धियों में अलका सरावगी के विचारधारा को सूक्ष्म रूप से रेखांकित करने का मेरा प्रयास है। जो अलकाजी के व्यक्तित्व को उजागर करने में सहायक हुई है।'

एक सजग रचनाकार अपनी कृतियों में जहाँ अपनी वैचारिक और भावात्मक प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्ति देता है, वहीं पर उसके सांस्कृतिक शील और संस्कार की अंत: सलिला भी निरंतर प्रवाहमान रहती है। वस्तुत: साहित्य की सृजना अर्जित संस्कारों और पारिवेशिक विचार बिंदुओं की टकराहट से उत्पन्न होनेवाले स्फुल्लिंगों की अभिव्यंजना है। इसलिए किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व और सृजन पर विचार करते समय उसके मानसिकता को निर्मित करनेवाले विचार बिंदुओं और स्वभाव में निहित संस्कारों का अन्वेषण जरूरी होता है।

INTRODUCTION

अलका अपनी रचनाओं के माध्यम से ज्ञान देती है। पहला उपन्यास 'कलि-कथा: वाया बाईपास' से लेकर चौथा उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' तक सिद्ध हो गया है कि वह एक युग द्रष्टा साहित्यकार हैं। उनकी रचनाओं को पढ़कर पाठक उनकी विचारधारा को समझ, समझदार बनता है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी जी ने अपने समीक्षा आधारों में रचनाकार के समय-समाज उसकी प्रेरणाओं, विचारधाराओं और रचनाकार के व्यक्तिगत जीवन के रचना पर पड़नेवाले प्रभावों को प्रमुखता दी है।

साहित्य का अर्थ है स-हित अर्थात् सर्व का हित इसलिए सच्चे साहित्य की स्थिति मूल्यपरक है और उसकी प्रकृति सर्व समावेशी है। साहित्य सर्जक स्वतंत्रचेता होते हैं और विचारधारा की प्रतिबद्धता साहित्य के लिए बंधन हो जाती है एक प्रकार का आरोपण अथवा हस्तक्षेप जिसके चलते लेखक को अपने स्वत्व और विचारों का खुला अन्वेषण करने की छूट नहीं मिलती वह किन्हीं सीमित विचारों को व्यक्त करने (या न करने) की बाध्यता में बंधा रहता है। वैसे भी साहित्य सृजन अनवरत बहनेवाली स्रोतस्विनी है, जबकि विचारधारा एक प्रकार का वैचारिक ठहराव समाज व समय की परिवर्तनधर्मी प्रकृति के कारण विकसनशीलता के समक्ष कोई भी विचारधारा भले ही कितनी प्रबल व मान्य हो अंतिम नहीं हो सकती उनकी साहित्यिक भाषा में कहें तो कोई भी सत्य किसी विचारधारा की सीमा में ठहरा नहीं सकता।

अलका सरावगी की मानसिकता को उजागर करते उन्हीं के विचार, ''पहली रचना की संयोगवश हुई चर्चा के कारण उत्पन्न एक तरह की स्नावयिक उर्जा में आगे की कहानियाँ लिखी गईजो मूलत: किसी एक चरित्र के इर्द-गिर्द बुनी जाकर प्रेम, स्वतंत्रता, अस्मिता जैसे शब्दों के अर्थ तलाशती थी। 'स्वतंत्रता' शब्द बचपन से ही मुझे बहुत लुभाता रहा है और तभी से आसमान और चिड़ियाँ मुझे जैसे इस शब्द का अर्थ देते रहे हैं। दुनिया का सबसे बड़ा रहस्या है– 'मानव मन और यही साहित्य के सृजन और पठन के आनंद का आधार भी है।''[१]

अपना 'कहानी संग्रह' प्रकाशित होते ही अलका जी को अपनी 'शै' बदलने की इच्छा हुई अर्थात् उन्हें एक छोटी सी कहानी में भी उपन्यास की दुनिया दीख पड़ी तभी उन्होंने कहा, ''अपनी कहानियों के बारे में एक और बात मैं मानती हूँ कि कहानी का मूल धर्म बहुत कुछ बदलने के बावजूद आज भी किस्सागोई ही बना हुआ है। मेरी कहानियों में वह प्राय: मिलेगी। मेरी रेखाएँ काफी कुछ यथार्थपरक हैं। इस दृष्टि से वे काफी पुरानी कहानियां भी हैं। मैं खुद यहाँ से उड़ान भर पाने की प्रतीक्षा में हूँ। जीवन बहुत सुंदर और संभावनापूर्ण है और आखिर 'हर शै बदलती है।' इनके यह विचार दर्शाते हैं कि उन्हें एक ही जगह, सीमा में बंधे, दायरे में काम करना पसंद नहीं है। इसलिए उनका मानना है, 'हर व्यक्ति का अनुभव है कि वह ऐसा सोचता है कि आज से अभी इसी क्षण से वह जीवन को एकदम नए सिरे से, फिर से जिएगा।''[२] यही बात इनपर भी लागू होती है। जब प्रथम उपन्यास प्रकाशित होने के साथ पुरस्कृत भी हुआ तब इनकी सोच इन्हीं के शब्दों में– ''अब आगे बढ़ना चाहती हूँ। पीछे जो मिला उसे भूलकर फिर एक नये सिरे से जीवन की शुरुआत।''[३]

अलका जी की रचनाओं में किस्सागोई, कथा कहानी, स्मृतियाँ इनकी भरमार है, इस विषय पर इनका कहना है, ''अपनी दादी से नींद आते वक्त उनकी गोदी में सुना था।'' उनके मत से दादा-दादी की ये लोक कथायें बच्चों को सुलाने के बहाने उनकी संवेदना को संस्कार रोपती, चेतना की आँखों को जगाने का कार्य करती हैं

अर्थात् 'नीति-कथाओं' के संकलन में बचपन की स्मृतियाँ और दादी का प्रेम और प्रेरणा की मूल में समाहित है। इसलिए उनके उपन्यासों में स्त्री चरित्र 'दादी' होती ही है। अलका जी के कहानी उपन्यासों द्वारा इनको जानना सहज है, क्योंकि उनकी सोच और आचरण में एक्य है। अधूरी छूटी शिक्षा को उन्होंने देर से ही सही, फिर से नई शुरूवात कर समस्याओं, उलझनों को तोड़ती अपनी ज्ञान की भूख मिटायी जो आज उनके साहित्य में प्रखर रूप से झलकता है। पुस्तकें अलका जी की चेतना की खुराक हैं, जिनके बिना उनकी तलाश या धार आपेक्षित सामर्थ्य अन्वेषित नहीं कर पाती। अपनी पसंद की किताबों से उन्होंने जीवन की शिक्षा ली है। 'मैं एक लेखिका ही नहीं साहित्यिक पाठक भी हूँ।' अलका जी का यह कहना साबित करता है वे किताबों से कितना प्रेरित हैं।

अलका जी का लेखकीय जीवन बहुत लंबा नहीं लेकिन वैशिष्टय पूर्ण है। इनकी पहली कहानी छपते ही चर्चा में आ गयी 'आपकी हंसी' इस कहानी छपने के निमित्त बने थे कथाकार, पत्रकार अशोक सेकसरिया, इन्हें अलकाजी अपना साहित्यिक गुरु मानती हैं, जिन्होंने उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया। अलका जी इन्हें प्रेरणा स्रोत नहीं मानती लेकिन कहती हैं, 'मेरी सबसे पहली रचना और आज जो लिखती हूँ वह अपने पहले जिन चंद लोगों को सुनाती हूँ उनमें पहले व्यक्ति हैं अशोक सेकसरिया वह मुझे मार्गदर्शन करते हैं लेकिन उस मार्गदर्शन में टीका-टिप्पणी, आलोचना-समीक्षा, बल्कि प्रशंसा भी नहीं होती सिर्फ विचार विमर्श होता है यही विचार-विमर्श की चर्चा मेरे मन की ताकत रचना विन्यास बढ़ाता है।''[१] अशोक सेकसरिया जी ने अलका जी को जीवन मूल्यों से ऐसा परिचय कराया कि उससे कई तरह के लोभ व आकर्षण खत्म हो गए, रह गयी सिर्फ एक विशुद्ध रचनाधर्मिता सभी चीजों से परे। इस बात को स्वीकारते हुए अपने गुरु के विषय में विचार देती हैं, ''जिस परिवेश में मैं पली बढ़ी उसके जीवन मूल्य थे फिर भी यह श्रेय अपने विवेक को दूंगी जिसने मार्गदर्शन के लिए अशोक जी को चुना, वे मेरे लिए एक ऐसी कसौटी हैं, जिस पर मुझको रोज खुद को कसना और खरा प्रमाणित करना होता है।''[२]

अलकाजी के लिए लेखन केवल आत्मरति मात्र नहीं वरन सामाजिक दायित्व और समाज की जड़ स्थितियों पर प्रहार करने का माध्यम है। अपने लेखन का उद्देश्य वे पाठकों को जागरूक करना मानती हैं, क्योंकि उनका मानना है कि जब तक उनकी रचनाएँ एक्टीविस्ट की तरह पाठकों की चेतना को नहीं झकझोरती तब तक उनका मकसद उनकी भूमिका पूर्ण नहीं होती। तथापि अलकाजी के साहित्य में विचारधारा का प्रभाव देखते हैं, इस विषय में सरावगी का कहना है, ''मैंने कहानियाँ वही खोजना चाही हैं, जहाँ आम अर्थ (या विशेष अर्थ में) कोई कहानी नहीं दिखती। एक जीवन हर एक के पास है। एक साधारणजीवन और हर कोई अपने होने का अर्थ किसी-न-किसी रूप में खोज रहा है। इस तरह हर जीवन में एक उपन्यास है। मेरे, आपके, सबके। यह बिल्कुल शुरू से ही मेरे लेखन की धुरी रही है। हर जगह न दिखती कहानी को लिखना यही यह भी लेखन कोर्दोदूग्द से बचाते `प्दम्व्हु से बचाते सनसनी से बचाते, किसी सिद्धांत या लेखन की प्रणाली से बचाते।''[१]

सरावगी जी एक स्त्री लेखिका हैं और उन्होंने जब लेखन शुरू किया तब 'स्त्री विमर्श' रचनाओं का दौर चल रहा था। फिर भी उन्होंने पुरुष प्रधान उपन्यास लिखा जिसने उपन्यास विधा का स्थापत्य बदल दिया, जिसे सराहा भी गया। इस विषय में अलका जी के विचार हैं– ''एक नारी है तो नारी के अपने अनुभव हैं। उसी तरह बच्चे के अपने अनुभव हैं, दलितों के अपने इस तरह अनुभव तो अलग-अलग हो ही सकते हैं पर इन अनुभवों को आपने चुना नहीं होता है, किशोरबाबू को समझने के लिए मुझे पुरुष तो नहीं होना पड़ा।''[२] अलकाजी के साहित्य विचार से ज्ञात होता है वह अतीत, वर्तमान एवं भविष्य को एक साथ लेकर चलती हैं क्योंकि इनके उपन्यास के मुख्य चरित्र अतीत की स्मृतियों में विचरण करते हैं, वर्तमान में शरीक होते हैं। इनमें उनके विचार हैं, ''शायद वर्तमान को ज्यादा अच्छी तरह एडाप्ट करने के लिए मैं अतीत की तरफ मुड़ती हूँ।''[३]

अलकाजी अपने औपन्यासिक रचनाओं में विषयानुकूल फिल्मी गीत लिखती हैं वह भी जीवन के सुख-दुख से जुड़े शायद उन्हें गीतों के कारण साहित्य में विचारों की श्रृंखला में मदद होती हो, मैंने उनके इस विशेषता का कारण पूछा तो उन्होंने अपने विचार प्रकट किए, 'हमारा जीवन बहुत सुंदर है सिर्फ उसे समझना और समझने के साथ उसका आनंद भी लेना है। संगीत-गीत, लोकगीत मनुष्य के जीवन को संवारते-उभारते हैं उसे बनाता है। अर्थात् मनुष्य के जीवन में जितने भी दुख के क्षण हैं वह उसपल भूल जाता है। जब जीवन से जुड़े गीत गाता या सुनता है। यह गीत नए सिरे से जीवन जीने के लिए प्रेरणा देते हैं प्रेरित करते हैं, या यूँ कहें कि इच्छाशक्ति बढ़ाते हैं। कुछ मिले न मिले लेकिन गुनगुनाहट के कारण एक सास में हम सुख-सुकून, शान्ति का अहसास तो महसूस करते ही हैं। यही मैं अपनी रचनाओं के माध्यम से बाँटती हूँ। जो आज के आधुनिक पीढ़ी के लिए बहुत जरूरी है।' इनके उपन्यासों में स्त्री चरित्रों ने लोकगीत गाये हैं इनके द्वारा अलकाजी और एक बात दर्शाती हैं। संपूर्ण विश्वसाहित्य में काव्य का सृजन पहले हुआ है, गद्य का बाद में। नारी ने भी अपनी सहज भावनाओं को काव्य (लोकगीत) के माध्यम से व्यक्त किया। साहित्य के विकास में नारी का योग उसके भावनात्मक जगत के अस्तित्व की कहानी है। नारी पुरुष की अपेक्षा अधिक भावुक, सहनशील तथा संघर्षों का शालीनता से सामना करनेवाली है। यह कैसे संभव था कि वह अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं करती थी। जिस वातावरण में वह जीवन-यापन कर रही थी उसमें अभिव्यक्ति के साधनों पर तो नियंत्रण होना संभव था किंतु भावनाओं को बंधन में जकड़ना पुरुष तो क्या स्वयं ब्रह्मा के लिए भी संभव नहीं था। लोकगीतों की गुनगुनाहट के माध्यम से उसका सुख-दुख हर्ष-विवाद, पीड़ा-बेचैनी, मान-अपमान व्यक्त होता था। अलका जी मारवाड़ी स्त्रियों के जीवन से जुड़े मुद्दों को भी उठाती हैं। इस प्रकार उपन्यासों के माध्यम से गीतों की पंक्तियाँ लिखना यह अलकाजी के विचारधारा का वैशिष्टय है। अलका सरावगी जी के विचारधारा को जानने के लिए, साहित्यिक मित्र परमानंद श्रीवास्तव जी को कोलकता से अलग-अलग समय पर लिखे गये अलका जी के पत्रों के कुछ अंश भर यहाँ प्रस्तुत हैं जिनसे अलका के भीतर और बाहर का द्वंद्व प्रकट होता है।

''मुझे लगा कि शायद मेरे जीवन के ३७ वर्ष
मुझे वास्तविकता को आयत्त कराने के लिए काफी नहीं हैं।
एक विराट म्दहल्ग्दह मुझे इस बाबत दिशाहारा
सा करता रहा....''

''मेरे अपने संस्कारों में कलियुग त्रेता आदि भी एक
ॅोंतूब है। एक अल्प-ईश्वर/अस्तित्व/प्रकृति भी -
जिससे मैं घबराहट में प्रार्थना कर सकती हूँ। एक कोई
बड़ा 'पर्सपेक्टिव' - जहाँ छोटी-छोटी विवशताएँ,
अपमान, असहायता ग्हेुगहर्ग्म्हिू हो जाते हैं।
यह कोई धर्म का 'इन्स्टीट्यूशन नहीं, पर है धर्म ही।
एक तरह का ्हिा सर्म्हिेग्स्ही सही।''

''एक दुनिया बनी है जिसमें ेमित्तहम, प्दहोूब,
ग्हीुगूब वाले लोग हाशिए पर हैं। चारों ओर
र्ैहग्र्ल्र्ेूगदह,ॅूर्गेतूबऔर स्ग्दम्ूब
का बोलबाला है।''

''मैंने दूसरे उपन्यास को शायद आधा लिख लिया है।
करीब १०० पन्ने हाथ के लिखे हुए। लेखन ही एक
मात्र ऐसी कला है जिसमें आदमी हर बार पहले से
कच्चा होता जाता है। मंजने की बजाय। कम से कम

अधिक प्रवीण तो नहीं होता।''

एक पत्र में अलका सरावगी लिखती हैं– ''मैंने कहानियाँ वहीं खोजना चाही है, जहाँ आम अर्थ (या विशेष अर्थ में) कोई कहानी नहीं दिखती। एक जीवन हर एक के पास है। एक साधारण जीवन। और हर कोई अपने होने का अर्थ किसी न किसी रूप में खोज रहा है। इस तरह हर जीवन में एक उपन्यास है। मेरे आपके सबके यह बिल्कुल शुरू से ही मेरे लेखन की धुरी रही है. हर जगह न दिखती कहानी को लिखना। यही यह भी लेखन कोे ेदूग्म से बचातें प्दम्व्हु से बचाते, सनसनी से बचाते किसी सिद्धांत या लेखन की प्रणाली से बचाते।'' अब आगे बढ़ना चाहती हूँ। पीछे जो मिला उसे भूलकर। फिर एक नये सिरे से जीवन की शुरुआत। और लिखना तो हमेशा पहले की बनिस्बत कठिन ही होता जाता है। कोई पूर्वाभ्यास काम नहीं होता। ऐसा सिर्फ लिखने के काम में होता होगा।''[१]

अलका के इन पत्रों के क्रम का अंत परमानंद जी एक वाक्य से करते हैं, ''अगर इन पत्रों की किताब देर सवेर भविष्य में बनी, तो मैं नाम दूंगा - Letters from a young writer''[२] परमानंद श्रीवास्तव जी कहते हैं, 'इन पत्रों के अलावा याद आता है कि अलका ने कभी किसी पत्र में पूँजीवाद के कलावाद में संक्रमण को आनेवाले दिनों का एक बड़ा खतरा बताया था।''[३]

अलका जी अहंकारी नहीं है; पर स्वाभिमानी स्त्री हैं बताते हैं परमानंद जी, ''अलका साहित्यिक सभा गोष्ठियों में (activist होना तो दूर) जाने से हमेशा ही बचती हैं। यह अहंकार नहीं है - एक घर परिवार जिसमें विभा या ज्योति सिर्फ देवरानियां नहीं है, सहेलियां भी हैं, पाठिकाएं भी हैं, उसमें महेशजी जैसे पति की चुप्पी शालीनता। मयंक-सलोनी जैसे बेटी-बेटे सब उनके पाठक हैं, उनके संस्कारों से उपजा आत्मानुशासन है। चिड़ियों को बिना देखे आवाज से वे पहचान लेती हैं। फिर आप उनका ब्योरा रंग, रूप बैठने की जगह सब सुन या जान सकते हैं।''[४] परमानंद जी के वक्तव्य पर अलका कहती है, ''मुझे सभा सम्मेलनों में जाना अच्छा नहीं लगता क्योंकि मेरा मानना है, 'मेल-मिलाप से स्पर्धा ईर्ष्या होती है द्वेष बढ़ते हैं तो इन चीजों से दूर रहना ही अच्छा है वैसे यहाँ कोलकता में हिन्दी रचनाकारों से मेल-जोल तो कम ही होता है।

साहित्य जगत में अलकाजी ने न तो किसी के साथ स्पर्धा का व्यवहार किया और न किसी वाद-विवाद में पड़कर मनोमालिन्य को प्रश्रय दिया। साहित्य को वह जीती है, साहित्य से समाज को प्रेरित करती है, साहित्य से भरपूर आनंदोपलब्धि कर रही है।

परमानंद श्रीवास्तव एक और बात का खुलासा करते हैं, ''कलिकथा पुरस्कृत हुई। तब श्रीलाल शुक्ल- जैसे बड़े लेखक जूरी में थे। मैंनेजर पांडे सहमत नहीं थे - मैत्रेयी पुष्पा की कृति 'अल्मा कबूतरी' के पक्ष में थे। नंदकिशोर आचार्य रमेशचंद्र शाह के पक्ष में थे। फिर लगभग सर्व सहमति से श्रीलालजी की पहल पर अलका सरावगी को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।''[१] अलका के उपन्यास कलि-कथा : वाया बाइपास की पांडुलिपी के महज बीस पन्ने पढ़कर मैंने कहा था, कि यही रवीन्द्र कालिया है– साथ ही वर्तमान साहित्य पत्रिका के कहानी महाविशेषांक से अलका की 'आपकी हंसी' और अनछपे उपन्यास के बीस पन्नों के बल पर कहा - 'एक दिन कोई अज्ञात नया बल्कि युवतर लेखक आयेगा और उपन्यास सरीखी विधा का भाग्य बदल देगा।''[२]

अलका जी को चिड़ियों में कुछ ज्यादा ही रुचि है जो वे अपने सभी उपन्यासों में चिड़ियों के विविध नाम आवाजें, रंग, जाति विषय में बताती हैं, इसे स्पष्ट किया अपने लेख में परमानंद श्रीवास्तव जी ने आवाज से पहचान लेती है चिड़िया।''[३]

इस प्रकार वागर्थ पत्रिका २००४ जुलाई में, परमानंद श्रीवास्तव जी ने 'अलका सरावगी : आवाज से पहचान लेती है चिड़िया' लेख लिखा था जो मुझे अलका जी को करीब से जानने में मददगार साबित हुआ।

अलका सरावगी के विचारधारा को सूक्ष्म रूप से रेखांकित करने का मेरा प्रयास है, जो अलका जी के व्यक्तित्व को उजागर करने में सहायक सिद्ध हुई है। अपने इसी हेतू की पूर्ति से अलका जी के रचनाओं के साथ उनसे परिचित व्यक्तियों से बात करने की कोशिश में एक दिन 'वागर्थ पत्रिका' २००४ जुलाई में मंजूरानी सिंह का लेख, 'ऐसी छात्रा थी अलका' पढ़ा इस लेख के अंत में मंजूरानी जी का संपर्क पता था, इसी पते पर मैंने अपने संपर्क पते - नंबर के साथ एक पत्र लिखा, कि अलका सरावगी के व्यक्तित्व की जानकारी संभव हो तो मुझे भेज दे। कुछ दिनों के बाद एक दिन उन्हीं का फोन आया और उन्होंने कहा, 'अलका ने अपना व्यक्तित्व कहीं प्रस्तुत नहीं किया है और मैं भी यही चाहूँगी कि वह अगर तुम्हें अपना व्यक्तित्व लिखित रूप में देती है तो मुझे भी दे देना, जो मैं आज लिख रही हूँ उसमें काम आ जाएगा; लेकिन वागर्थ पत्रिका में मैंने जो उसका व्यक्तित्व लिखा है वही अलका की सच्चाई है और वह जैसा है वैसा अपने शोधकार्य में मदद के लिए ले सकती हो।' मंजूरानी सिंह जी की ही बातें या संस्मरण जो अलका सरावगी के व्यक्तित्व विचारों को उजागर करता है प्रस्तुत है–

मंजूरानी सिंह कहती हैं ''मैंने अलका से बहुत कुछ सीखा, अनुभव लिया है। अलका को मैंने अत्यंत ही संवेदनशील, बुद्धिमती और निष्कपट स्त्री के रूप में जाना बात। सन् १९८८ की है। मैं सेठ सूरजमल जालान गर्ल्स कॉलेज में हिन्दी की प्राध्यापिका थी। एक दिन भारतीय भाषा परिषद में डॉ. कुसुम खेमानीजी, जिनका मुझ पर स्नेह रहा है, ने अपनी एक पारिवारिक लड़की से किसी विशेष कारणवश मुलाकात करवायी। वह लड़की थी अलका उससे बातचीत हुई कारण का खुलासा भी। अलका प्राइवेट से एम.ए. (हिन्दी में) करना चाहती थी और ट्यूशन के लिए एक योग्य शिक्षक की तलाश कर रही थी। बातचीत के दौरान अलका बड़ी शालीन लगी मुझे। उसका व्यक्तित्व एक आभिजात्य में लिपटा जरूर था पर छल-छद्म, कृत्रिमता, आडंबर, अहंकार आदि का कोई लेश नहीं था उसमें वह दो बच्चों की माँ थी। स्नातक की शिक्षा के बाद ही उसका विवाह हो गया था। वैवाहिक और पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए उसे कई वर्ष बीत चुके थे। बच्चे अब स्कूल जाने लगे थे और अलका संभवत: थोड़ी मुक्ति थोड़ा अवसर महसूस करने लगी थी कि वह अपने बारे में कुछ सोचे। आगे पढ़ने की उसमें सच्ची चाहत जगी थी। यह सब समझकर मैंने मन को इस नए अनुभव के लिए तैयार किया। मैंने बचपन से आर्थिक तंगी के कारण उपजती आदमी की ढेर सारी समस्याओं को जाना था पर संपन्नता भी सारी समस्याओं का हल या सारे सुखों का स्रोत नहीं है, यह अनुभव भी अलका के कारण हुआ। नियत दिन और समय पर उसके घर जाने लगी। धीरे-धीरे उसके संपूर्ण परिवार से ही परिचय हुआ। सबसे बड़ी बहू होने के नाते एक संयुक्त परिवार में अलका के बड़े दायित्व थे। मुझे यह बहुत ही अच्छा लगता कि हर सदस्य के साथ अलका का बढ़ा ही गहरा और आत्मीय संबंध था। रोज-रोज अपने भीतर बुद्धि, प्रेम, त्याग और उदारता का विकास किया जो इसके लिए जरूरी था। सारे बच्चे उसे माँ ही कहते - सभी उसका सान्निध्य पाने, उसकी गोद में बैठने के लिए मारा-मारी करते। अलका और उसकी देवरानियों के बीच बड़ा गहरा अपनापा है। ऐसे परिवार के सामने ही एकल परिवार की अवधारणा में ढेर सारे दोष नजर आते हैं।''[१]

''एक दिन हम कोलकता विश्वविद्यालय पहुँचे और कई जानकार लोगों से जानकारी ली तो पता चला उसका हिन्दी में एम.ए. करना नामुमकिन है क्योंकि उसके बी.ए. में पूरे विषय के रूप में हिन्दी नहीं था। 'ना' सुनकर भी हम दोनों किसी उपाय के लिए यहाँ-वहाँ चक्कर लगा रहे थे। यह चक्कर व्यर्थ नहीं गया, अलका को परीक्षा की स्वीकृति मिल गई। इस सान्निध्य में धीरे-धीरे हमारा संबंध मैत्रीपूर्ण हो उठा। हमारे संवाद का विषय केवल साहित्य ही नहीं रहा वरन पूरा जीवन ही हो गया है। मैंने उसके करीब जाकर यह जाना कि जीवन ने उसके मातृत्व के साथ एक बहुत बड़ा छल किया है। उसकी पहली संतान शारीरिक रूप से अक्षम हो गई थी। कई वर्षों के इलाज के बावजूद कोईसफलता हासिल नहीं हुई। फिर भी उसे हर तरह से सामान्य बनाने का संर्घष जारी था-है भी। उसकी समुचित शिक्षा-दीक्षा की घर में पूरी व्यवस्था है। किसी स्वस्थ माँ-बाप की यह एक अकथ्य-अमिट वेदना है। अलका वर्षों तक इस वेदना से जूझती रही थी। मेरी दृष्टि दे इसी वेदना और अंत:यंत्रणा के कारण उसके भीतर अपनी किसी बड़ी रचनात्मकता को प्रमाणित करने का संकल्प जगा था।''

''अलका अत्यंत मेहनती थी। उसकी बुद्धि प्रखर और चित्त व्यवस्थित था। उसने बहुत ही एकाग्र चित्त और लक्ष्यबद्ध होकर एम.ए. की तैयारी की। उसका उसे सुफल भी मिला। वह प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान लेकर पास हुई। यदि प्रतिभा के साथ गहन इच्छाशक्ति और लगन हो तो व्यक्ति के भीतर छुपी सारी संभावनाएं खुल-खिल उठती हैं। अलका ने जीवन की खुशी का सूत्र पा लिया था। उसके सामने जीवन का नया आकाश खुला था। वह नए सिरे से प्रकृति के साथ संलग्न होने लगी थी। फूल, पेड़ और चिड़ियों की दुनिया उसकी अपनी दुनिया होती, ये उसे ज्यादा ही लुभाती, आल्हादित करती-भौतिक आवश्यकताएं उसकी बहुत ही कम थी।''[२]

अलका के व्यक्तित्व की संवेदनशीलता, आंतरिकता आत्मीयता के और कई पहलू हैं जिन पर फिर कभी बात हो सकती है। मंजुरानी सिंह अंत में कहती हैं, ''अलका सरावगी का व्यक्तित्व मेरे शिक्षण कर्म के संदर्भ में एक ऐसा उदाहरण है जो मुझे हमेशा किसी छटपटाती प्रतिभा और प्रस्तरों में दबी संभावनाओं की शापमुक्ति के लिए प्रयत्नशील होने को प्रेरित करता है।''[३]

अलका सरावगी अपने पहले कहानी संग्रह, 'कहानी की तलाश में' के अंर्तगत अपनी बात में कहती हैं– ''एक सुदंर और सम्मानपूर्ण जीवन की आकांक्षा है, बल्कि इस हक की मांग है।'' अलका अपने स्वभाव का परिचय इस तरह देती हैं- ''स्वतंत्रता' शब्द बचपन से ही मुझे बहुत लुभाता रहा है और तभी से आसमान और चिड़िया मुझे जैसे इस शब्द का अर्थ देते रहे हैं।'' ३ अलका जी खुद को स्वतंत्र रखने की बात करती हैं, साथ ही औरों के बारे में उनका कहना है ''यदि- स्वतंत्रता और प्रेम सचमुच हमारे लिए मूल्य है तो हमारी कोशिश होगी कि दूसरों को भी हम इन्हें दें।''[४]

स्त्री स्वतंत्रता की बात पर अलका कहती हैं ''मुझे अपनी शक्ति को जानने के लिए पुरुष-विरोधी होने की कभी जरूरत नहीं हुई। बल्कि मैंने यह जाना कि एक स्वस्थ विकसित संवेदनशील समाज में ही स्त्री पूरे आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और सम्मान के साथ जी सकती है। इसलिए जरूरत उस समाज को ही बनाने की है। दुनिया का सबसे बड़ा रहस्य है - मानव का मन और यही साहित्य के सृजन और पठन के आनंद का आधार भी है। जीवन बहुत सुंदर और संभावनापूर्ण है और आखिर ''हर शै बदलती है।''[५]

अलका सरावगी अपने लेखन के विषय में कहती हैं, ''एक आत्मकथा को पढ़ते हुए भी कोई सब कुछ थोड़े ही जान पाता है किसी के बारे में ? कितना कुछ होता है जो लेखक खुद अपने बारे में नहीं जानता वह छूट जाता है। कितना कुछ होता है जो वह जानता है लेकिन कहने लायक शब्द नहीं खोज पाता वह छूटता है; और

कितना कुछ होता है जो वह कहते समय काट-छांटकर रोक लेता है। इस जिंदगी में सब कुछ 'लगभग' होता है। 'एप्रोक्सिमेंट' लेकिन यही तो है जो आदमी को हांके ले जाता है। अपूर्णता से पूर्णता की ओर की यात्रा है जीवन।''[१]

''किताबों की दुनिया से असली जिंदगी कितनी अलग है।''[२]

''कहे हुए से लिखा हुआ ज्यादा प्रभावित होता है।''[३]

अपनी प्रशंसा किसे अच्छी नहीं लगती और आलोचना-समीक्षा किसी को परिमार्जन लगती है तो किसी को कष्ट होता है। अलकाजी के रचनाओं की समीक्षा आलोचना होती है तो इस संबंध में उनके विचार दृष्टव्य हैं, 'समीक्षक विजय बहादुर सिंह जी से अलका जी कहती हैं, ''लोग कलि-कथा के अभिनव शिल्प पर बात करते हैं तो मुझे कुछ कष्ट होता है। आपने एक वाक्य में मेरा यह कष्ट मेट दिया किन्तु इससे कहीं अधिक वह राष्ट्रीय विचारधाराओं के दुखद भटकावों को रेखांकित करता हुआ उसकी विस्मृतियों को हमारी स्मृतियों में बदलता भी है। शेष-कादम्बरी पर आपकी समीक्षा का बहुत इंतजार है।''[४]

अलकाजी की रचनाओं के माध्यम से वह स्वाभिमानी और स्पष्टवादी है यह तो जाहिर है और उनके शुभचिंतक भी यही कहते हैं। अलका सरावगी स्वाभिमानी और स्पष्टवादी स्त्री, लेखिका है। इस संदर्भ में उनके विचार-व्यक्तित्व यहाँ प्रस्तुत है।

अनन्त समय का प्रत्येक घुमाव विकास या परिवर्तन की संज्ञा पाता है। ठहरा समय और अपरिवर्तित काल की कल्पना व्यर्थ है। कभी संवरता, कभी बिगड़ता यह परिवर्तन-चक्र अहोरात्र गतिमान है। यह घूमेगा नहीं तो कुछ बनेगा भी नहीं। समय-शृंखला के इसी शाश्वत सत्य को कवित्वमय वाणी में प्रसाद जी ने कहा है–

(पुरातनता का यह निर्भीक, सहन करती
न प्रकृति पल एक नित्य नूतनता का
आनंद, किये है परिवर्तन में टेक।)

नया रूप नया आकार ग्रहण करता वक्त अपनी अखंडता में समाज के रिश्तों से प्रभावित संचालित होता चलता है। कथा के विकासक्रम में भी इन कालिक परिवर्तनों की महत्ता सुस्पष्ट है। कथाकार अपने युग के घटनाक्रमों और क्रिया व्यापारों को अपने अनुभव और निश्चित दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। इस प्रक्रिया में वह जीवन को समझने और समय की आहटों एवं अंतर्ध्वनियों को समझाने का प्रयास करता है। निश्चित दृष्टिकोण एवं जीवन ही कथाकार का स्वाभिमान और स्पष्टवादिता गुण होते हैं।

अलका सरावगी जी अपने जीवन में अपने एवं परिवार के प्रति स्वाभिमानी हैं क्योंकि उन्होंने स्नातक शिक्षा के बाद विवाह किया और पारिवारिक जिम्मेदारी को पहले निभाया फिर अपनी अधूरी शिक्षा पूरी की और आज वह संपन्न परिवार के साथ रिश्ते निभाते एक प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं, खुद के बलबूते पर यह गुण उनके स्वभाव में ही है। आधुनिक युवा उपन्यासकार अलका जी की स्वाभिमानी स्पष्टवादिता वृत्ति उनके संपूर्ण साहित्यिक रचनाओं में स्थित विचारधारा व संपूर्ण चरित्रों से झलकती हैं हिन्दी साहित्य-संस्कृति और कला के विषय में इनका अनुशीलन विरल और विलक्षण है। लेखिका की रचनाएँ समाज के समालोचन की है। इससे जाहीर होता है कि उनकी समीक्षा दृष्टि कितनी तीक्ष्ण और बुद्धिदीप्त है। ऐसे उज्ज्वल मन, मेधा और बुद्धि की समाहारा कम ही देखने को मिलते हैं।

समाज, संस्कृति, समय जीवन अत्यंत ही कौतूहल जगानेवाले विषय हैं, इसमें विचरण करनेवाले मानवमन को जानने की जिज्ञासा रखते हुए स्वाभिमानी अलकाजी अपना स्पष्टवादी वक्तव्य रचनाओं के द्वारा प्रस्तुत करती हैं। लेखिका बंगाल के समाज और संस्कृति की गंभीर अध्येता है। पश्चिम बंगाल कोलकाता की संस्कृति-लोग, उनके जीवन के बारे में उनकी अनुभूति और चेतना तीक्ष्ण और भेदक है। इसका एहसास उपन्यासों के सुलिखित विचारों कथाओं में होता है। दरअसल लेखिका की कलम समाज के किसी भी पक्ष को कुरेदने उकेरने में सक्षम है और कुछ सोचने पर मजबूर करती है, बल्कि यो कहें कि उनकी औपन्यासिक रचनाएँ जहाँ समाप्त होती हैं, वहीं से विमर्श और चेतना का दूसरा चरण आरंभ होता है।

अलकाजी के जीवन का एक और सच है कि उनकी 'पहली संतान' शारीरिक रूप से अक्षम है उसे सामान्य बनाने के लिए इनके जीवन के कुछ वर्ष संघर्ष में गए इस वेदना को वह पेड़, पौधों, चिड़ियों के साथ बाँटती है। लेकिन इस वास्तविक जीवन को कहीं भी जाहिर नहीं होने देती क्योंकि इनका कहना है, 'महानगर के समाज में मनुष्य की एक विशेषता है; जब उसकी मरजी हो, 'एनोनिमिटी' चाहता है - ऐसा जीना जैसे उसे कोई जानता न हो।''[१]

डॉ. अलका सरावगी के व्यक्तित्व में जो गरिमामय स्वाभिमान एवं स्पष्टवादिता का गुण दिखाई पड़ता है वह उन्होंने बड़े जतन से अर्जित करके ओढ़ लिया है। यही उनका खरा स्वभाव है। भीतर से वह बहुत ही नरमदिल है। यह बात उनके निकटतम शुभचिंतक कहते हैं– वह स्वयं अपने व्यक्तित्व की व्याख्या कभी करती नहीं लेकिन उनके रचनाओं के माध्यम से मेरा मानना है, 'वे स्वयं नारियल की तरह है। बस उपर का कवच टूटने न पाए, इसके बारे में वे बड़ी सावधानी बरतती हैं।'

अलका सरावगी जी ने बोधकथा और लोककथा के प्रचलित किस्सों को नए संदर्भों के साथ जोड़कर सामाजिक विसंगतियों पर भी खुलकर चोट करने का अभिनव प्रयोग किया है जो उनके स्पष्टवादी व्यक्तित्व के लिए सराहनीय है। अलका जी का कहना है, ''मुझे लगता है कि लिखे हुए शब्द बोले हुए शब्दों से ज्यादा सच, प्रभावजन्य बोल पाते हैं।'' इसलिए मन की बातें-विचार पत्रों द्वारा लिख अलका जी ने समय -समय पर परमानंद श्रीवास्तवजी को भेजे थे। इनकी रचनाओं के पात्र भी पत्रों द्वारा ही विचारों की लेनदेन करते हैं।

महिला रचनाकार का जीवन कभी भी आसान नहीं रहा, यह बात जितनी बीसवीं शताब्दी में सही थी उतनी ही आज भी है। इस परिवेश में अपने स्वाभिमान के साथ स्पष्टवादी विचारों की लेखनी यह एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व ही है। यह सच है कि जीवन में सफलता के लिए दूरदर्शी होना आवश्यक है। अतीत वर्तमान के सूत्रों को थामकर भविष्य का अनुमान कर लेने की क्षमता अलका जी में है, ऐसा नहीं कि दूर तक देखने में वे अपने आसपास से बेखबर है। अलका जी स्वाभिमानी हैं स्पष्टवादी विचार व्यक्त करती हैं साथ ही अपने संस्कृति का रिश्तों का अपने समाज का मान रखा है। साहित्य जगत में अलका जी ने न तो किसी के साथ स्पर्धा का व्यवहार किया और न किसी वाद-विवाद में पड़कर मनोमालिन्य को प्रश्रय दिया। साहित्य को वह जीती है।

अलका सरावगी के विचारों में इतनी स्पष्ट अभिव्यक्ति है जो साहित्य में उतरती है। उनके सभी उपन्यासों में एक यथार्थ वास्तविक स्पष्टता है - कि एक ऐसी बानगी प्रस्तुत करता है जिसमें रंगभेद, नस्ल, आदमी, औरत, जीवन, रुढ़ी, परंपरा, आधुनिकता, बदलता समाज रूप तथा उन तमाम संवेदनाओं का सैलाब है जो पाठक को अपने साथ बहाकर ले जाता है। लेखिका अपने रचना संसार के विविध प्रयोगों में जीवन की कट्टर बर्बरता के कई चेहरे दिखाती है इनके कुछ चरित्र जिंदगी की सच्चाई बयान करते हैं। जो उनकी पुस्तक, कोई बात नहीं में देखा जा सकता है।

स्वाभिमानी एवं स्पष्टवादिता अलका जी ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में जीवन के इर्द-गिर्द फैले सच्चे अनुभवों का दस्तावेज प्रस्तुत किया है। अनुभवों की प्रामाणिकता के लिए उन्होंने सदा सत्य का समर्थन किया है। यह उनकी रचनात्मक आभा है। जिसने कहानी और उपन्यास की गुणवत्ता में श्रीवृद्धि की है। कथावस्तु की दृष्टि से अलका जी में पर्याप्त वैविध्य देखने को मिलता है। अत्याधुनिकता के निर्मम प्रहारों का शिकार मनुष्य, मनुष्यता से दूर हटता जा रहा है। इस अत्याधुनिकता के निर्मम प्रहारों से शिकार होते मनुष्य को बचाने के लिए अलकाजी संयुक्त परिवार का सुंदर रूप अपने उपन्यासों में लिखती हैं जिससे मनुष्य रिश्तों की, परिवार की और सभ्यता संस्कृति के महत्व को समझे।

वस्तुत: अलका सरावगी साहित्य के ध्रुवीकरण से दूर, साहित्य की राजनीति से दरकिनार मात्र लिखने पर भरोसा करती हैं। अलका जी की विचार धाराएँ गरिमा प्रधान हैं। अपने युग के सृजन को विविध कलात्मक भंगिमा प्रदान करती हैं। प्रत्यक्ष जीवनानुभवों की भित्ति पर निर्मित अलकाजी का विचारशील रचनाजगत क्रांतिचेष्टा के भीतर लोकमंगल का पथ प्रशस्त करता है। इस दृष्टि से अपने समय और जीवन की अंतरंगता को पहचाननेवाली अलकाजी ने युगीन मान्यताओं और समस्याओं को ही अपने विचारों द्वारा रचनात्मक आयाम प्रदान किये हैं।

ग्रंथ सूची

1. कहानी की तलाश में – अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1996
2.दूसरी कहानी – अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000
3.कलि–कथा : वाया बाइपास – सरावगी, आधार प्रकाशन पंचकूला, हरियाणा 1998
4.शेष कादम्बरी – अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2001
5.अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व एवं सिध्दांत – डॉ. सुदेश बत्रा, अमन प्रकाशन 2000
6.साहित्य व संस्कृति – डॉ. देवराज, पंचकूला प्रकाशन 2001
7.पानी के प्राचीर – रामदरश मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी 2000
8.हिन्दी शब्द समूह का विकास – डॉ. नरेन्द्र मिश्र, साहित्य भवन आगरा 2001
9.समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ – डॉ. पुष्पपाल सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 1986
10.मुहावरा – लोकोक्ति कोश – हरिवंशराय शर्मा, साहित्य भवन 1999
11.आधुनिक पाश्चात्य उपन्यासों में यथार्थवाद – अमरनाथ जौहरी, पंचकुला प्रकाशन
12.हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास – डॉ. ओम शुक्ल, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर 1964
13.उपन्यासों की समय संवेदना – वी.बी.सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2007

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net